What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

ARYAN VOICE

YEAR 36	10/2013-14	MONTHLY	April 2014

Saturday 17th May 2014
ForVedic Vivah Mela
(Matrimonial Get Together)
(Page 25 & 26 for deatls)

Venue
ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS
(Charity Registration No. 506019)
ERSKINE STREET, NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA
TEL: 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org
Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

Mantra	**Shri Krishan Chopra**	**3**
अध्यात्म के शिखर पर-7	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**5**
संस्कार	**आचार्य डॉ. उमेश यादव**	**7**
Obesity	**Health Corner**	**10**
Reflection	**Shailesh Joshi**	**11**
Matrimonial Notice		**14**
News (पारिवारिक समाचार)		**16**

For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan
(Office Manager)
Office Hours
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm
Weekend & Bank holidays Closed
Tel. 0121 359 7727

Bestower to Rich and Poor
Krishan Chopra

यो रध्रस्य चोदिता यः कृशस्य यो ब्रह्मणो नाधमानस्य कीरेः ।
युक्त ग्राव्णो योऽविता सुशिप्रः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः ॥
ऋग्वेद २.१२.६

yo radhrasya choditaa yah krishasya yo brahmano naadhmaanasya keereh l
yuktagraavno yoavitaa sushiprah sutasomasya sa janaasa indah ll
Rig 2.12.6

Meaning in Text Order

Yah = who, radhrasya = rich , choditaa = inspirer, krishasya = poor, yah = who, brahmanah = the knowledge of the Vedas, naadhmaansya = giver of all bounties, keereh = the teacher of all kind of knowledge, yuktagraavaanah = preacher of different kind of knowledge, yah = who , avitaa = protector, suhiprah = worthy of our acceptance, sutasomasya = who enable students to taste the nectar of knowledge, sah= He, janaasah = Omen, Indrah = glorious.

Meaning

O men! It is God who protects prosperous and poor. He also admires and inspires the learned. He also provides protection to the noble and learned who imparts the knowledge in the form of nectar to the students. Such God is great and glorious.

Contemplation

When we achieve success in the life, our joy is out of bound. That success makes us arrogant and we consider other people lower than us. This arrogance takes us far away to this extent that we deny the existence of the creator of the universe. But when in peace we conremplate over it then we realize that our arrogance has no foundation.

Whatever success we achieve, God is the inspirer of it. Whatever success is bestowed on rich and poor is the result of their actions due to inspiration of God. And the day, due to their inactiveness, when Lord does not wish to bestow His grace on them then their whole wisdom become worthless. Being all the facilities with them they loose it and the success turn into failure. On the other hand if God is willing, a poor man who has got nothing, all the means are available to him automatically. Whatever is bestowed on rich and poor, it is according to his actions and with the inspiration of God. Mere effort cannot meet the success unless our actions are not according to God. .

The teachers who deliver all kind of knowledge to the students and students who acquire knowledge from them are protected by God. The teacher and students succeed in their duties when God is on their side. It is often seen that being excellent wisdom of students and superb teacher can not produce bright students if the kindness of God is not with them. The teachers could not receive the same glorification which they deserved it. O the desirous of success! God is worthy of adoration. Learn to meditate on Him. Shape yourself according to His qualities, actions and then your success is guaranteed.

अध्यात्म के शिखर पर-भाग-७

आचार्य डॉ. उमेश यादव

स्तुति, प्रार्थना और उपासना आध्यात्मिक शिखर पाने के लिये अत्यन्त सहायक हैं । पारिभाषिक तौर पर अब तक हमने विगत लेखों में स्तुति, प्रार्थना और उपासना को समझा । ये तीनों अध्यात्म जगत्के महत्त्वपूर्ण आयाम हैं । यहाँ हम कुछ सुपरिचित मंत्र प्रयोग के रूप में देखेंगे । प्रस्तुत मंत्र प्रस्तुत स्तुति, प्रार्थना अथवा उपासना को स्पष्ट करने में उदाहरण हैं ।

स्तुति- स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्। कविर्मनीषी परिभू: स्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान्व्यदधाच्छाश्वतीभ्य: समाभ्य: । यजुर्वेद ४०/८

इस मंत्र में ईश्वर की केवल स्तुति बतलायी गयी है । स्तुति भी दो प्रकार से समझें-सगुण और निर्गुण । सगुण- जो-जो गुण ईश्वर में है , उसे सीधा बोलना ईश्वर की सगुण स्तुति है और जो-जो गुण ईश्वर में नहीं है, उसे तद वत्‌बोलना इश्वर की निर्गुण स्तुति है । इस मंत्र में ईश्वरीय स्तुति की दोनों विधायें स्पष्ट हुयी हैं । प्रथमत: सगुण स्तुति के उदाहरण देखें-

स पर्यगात्‌वह ईश्वर सब जगह पहुँचा हुआ अर्थात्‌सर्वव्यापक है । शुक्रम्‌वह परमेश्वर अत्यन्त शीघ्रकारी और बलवान्है । शुद्धम्‌शुद्ध है । कवि:- सर्वज्ञ है । मनीषी- सबका अन्तर्यामी है । परिभू:- सर्वोपरि विराजमान और स्वयंभू:-सनातन

स्वयंसिद्ध है । वही परमेश्वर शाश्वतीभ्य: समाभ्य:- अपनी जीवरुप सनातन अनादि प्रजा को अपनी सनातन विद्‌या से याथातथ्यत: -यथावत्‌अर्थात्‌ठीक-ठीक

वेद-ज्ञान द्‌वारा अर्थान्‌अर्थों का वोध व्यदधात्‌कराता है । यह सगुण स्तुति हुयी । अब निगुण स्तुति समझें-

अकायम्‌वह परमेश्वर कभी शरीर धारण अथवा जन्म नहीं लेता । अब्रणम्‌उस में कोई छिद्र नहीं होता । अस्नाविरम्‌वह कभी नाड़ी आदि के वन्धन में नहीं आता । अपापविद्धम्‌वह कभी पापाचरण नहीं करता क्योंकि वह पापों से विद्धा हुआ नहीं है । परमात्मा न पाप चाहता है, न सोचता है और न

ही करता है। फलतः परमेश्वर में क्लेश, दु:ख और अज्ञान कभी नहीं आता। वस्तुतः पाप तो क्लेश, दु:ख और अज्ञान से ही उत्पन्न होता है। इसी से रागद्वेषादि दोष भी होते हैं जो ईश्वर में नहीं हैं। जो मनुष्य ऐसा मानता है वह ईश्वर की निर्गुण स्तुति करता है।

इस प्रकार सत्य रुप से ईश्वर की स्तुति करें तो हमारे अन्दर भी कुछ ईश्वरीय गुण बढ़ने लगते हैं। ईश्वर न्यायकारी है, हम भी न्यायकारी बनें। वह सत्य है तो, हम सत्यवादी बनें, इसी तरह दयालुता, बलवता, शीघ्रकारिता, अनुशासन आदि के गुण-कर्म-स्वभाव में वृद्धि सम्भव है। हम कह सकते हैं कि स्तुति केवल क्रिया मात्र नहीं है अपितु उत्तमोत्तम गुण-वृद्धि में भी अत्यन्त सहायक है। पर यह भी सच है कि जो मनुष्य केवल भांड की तरह ईश्वर के गुण -कीर्तन करता और अपना चरित्र नहीं सुधारता, उसके द्वारा ईश्वरीय स्तुति करना भी व्यर्थ है। अब हम प्रार्थना के कुछ उदाहरण देखें।

यां मेधां देवगणाः पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा॥ यजु. ३२/१४

हे अग्ने= प्रकाशस्वरुप परमेश्वर, जिस वुद्धि की विद्वान्, ज्ञानी और योगी लोग उपासना करते हैं या चाहते हैं, कृपा करके तया मेधया=उसी वुद्धि द्वारा अद्य=

इसी वर्त्तमान काल में माम्= मुझे मेधाविनम्= वुद्धिमान्कुरु= करें। यहाँ "अद्य" शब्द से वर्त्तमान कालीन/ आज/ शीघ्रता आदि अर्थ ग्राह्य है। इसके साथ-साथ हमें यह भी जानना है कि प्रार्थना केवल क्रिया मात्र से सफल नहीं होती अपितु इसकी सफलता के लिये अनुकूल दिशा में आवश्यक पुरुशार्थ की जरुरत है। जाना है उत्तर दिशा में, तो दक्षिण दिशा में चलकर गन्तव्य स्थल को नहीं प्राप्त किया जा सकता। निकम्मा होकर केवल बैठे रहने से भी गन्तव्य स्थल नहीं मिल सकता। अतः प्रार्थना के साथ पुरुषार्थ भी अनिवार्य है। सफलता तभी मिल सकेगी जब अनुकूल दिशा में समुचित पुरुषार्थ किया जाय। उत्तमोत्तम वुद्धि चाहिये तो आवश्यक पुरुषार्थ करना ही होगा। स्वाध्याय, चिन्तन, मनन, श्रवण, सत्संग, गुरु-सेवा तथा गुरु-मुख से सुनना इत्यादि समुचित रुप से अनुकूल दिशा में पुरुषार्थ करते हुये यदि ईश्वर से सद्वुद्धि हेतु प्रार्थी हों तब ईश्वर की कृपा से पुरुषार्थभरा प्रार्थी के अन्दर सद्वुद्धि का विकास व ठहराव सम्भव होने लगता है फलतः वह सदैव जीवन में सन्मार्ग का ही पथिक बना रह सदा सुखी रहता है।

सँस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

”जन्मना जायते शूद्रः, सँस्काराद्द्विज उच्यते” मनुस्मृति

वैदिक मान्यताओं को विकसित करने में महराज मनु का नाम महिमापूर्वक लिया जाता है। उन्होंने मनुष्य -जीवन का सुखमय चरित्र, सुखमय अवस्था और सुखमय जीवन की सफलता बनी रहे ; एतदर्थ वैदिक मान्यताओं की महिमा ही सबसे पहले बतलायी और मनुष्य मात्र को इस ओर प्रेरित किया कि सब अपने मानवीय जीवन में वैदिक मूल्यों का स्थान दें। यज्ञ, योग , ज्ञान, कर्म इत्यादि विधाओं में एक और महत्त्वपूर्ण विधा है जो मानव जीवन को जीवन्त कर सकता है। वह है-सँस्कार जो पूर्णतया वैदिक मूल्यों से परिपूर्ण है। सँस्कार-विधि-विधान अपने आप में एक प्रयोग-शाला है जहाँ मानवीय मूल्यों का निर्माण स्रोत बनाया जाता है। उपरि लिखित उद्घोषणा आचार्य मनु महाराज की है-जन्मना जायते शूद्रः --इति इसका मतलब है कि सारे मनुष्य जन्म से शूद्र ही होते हैं; सँस्कार से ही वे द्विज (दो बार जन्म लेने वाला अर्थात्मातृ-गर्भ और गुरु-ज्ञान-गर्भ से) कहलाता है। यहाँ शूद्र का अर्थ है- अनपढ़, पर आजीविका चलाने हेतु सेवा-सुश्रूषा का काम अपनाता है और द्विज का अर्थ है -पढ़ा-लिखा और सँस्कारित जो अपनी आजीविका हेतु ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वृति के अनुसार अपनी योग्यता पर आधारित कार्य अपनाता है। यह भी जान लें कि ब्राह्मण आदि चार वर्ण गुण-कर्म-स्वभाव रुपी योग्यता पर आधारित है, न कि जन्म पर। अत एव मनु जी ने यहाँ वैदिक मत को सीधा कहा कि जन्म से सभी शूद्र हैं, पर सँस्कार से ही द्विज बनते हैं। इस कारण द्विज का सार्थक अर्थ हुआ पढ़ा-लिखा श्रेष्ठ आचरण को धारण करने वाला।

संसार में मानव और पशु में सँस्कार का ही अन्तर है । उसे ही धर्म कह दिया गया । सँस्कार अथवा धर्महीन मानव भी पशुतुल्य व्यवहार करने लग जाता है इसीलिये गुरु-ज्ञान की महिमा गायी जाती है । मनुष्य सँस्कारयुक्त होने के कारण ही धर्म को पहचानता है । एक सँस्कृत-कवि ने ठीक ही कहा है-

आहारनिद्राभयमैथुनञ्च, सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषो, धर्मेण हीन: पशुभि: समाना ॥

खाना-पीना, सोना, भय खाना, बच्चे पैदा करना ये चारों मनुष्य और पशु में समान है । पर धर्म मनुष्य में विशेष होने से मनुष्य पशु से भिन्न है । वस्तुत: यह धर्म मनुष्य में सँस्कार से ही विकसित होता है ।
मानवदेह में जन्म से मृत्यु पर्यन्त निम्न कारणों से जन्म से पूर्व तीन और जन्म के पश्चात्शेष तेरह सँस्कारों को विधिवत्करने का आदेश है ।

१. आत्मा सदा श्रेष्ठ बना रहे २. बुराइयों से बचा रहे ३. जन्म से पूर्व और पश्चात् शरीर धारी आत्मा का उत्तरोत्तर गुणात्मक विकास यथाविधि होता
रहे ।
ऋषियों द्वारा परिचित कराये गये उपरोक्त १६ सँस्कारों के नाम इस प्रकार हैं ।
१. गर्भाधान २. पुंसवन ३. सीमन्तोन्नयन ४. जातकर्म ५. नामकरण ६. निष्क्रमण ७. अन्नप्राशन ८. मुण्डण/चूडाकर्म ९. कर्णवेध १०. उपनयन ११. वेदारम्भ १२. समावर्त्तन १३. विवाह १४. वानप्रस्थ १५. संन्यास और
१६. अन्त्येष्टि कर्म ।

ये सभी अपने-अपने समय पर सम्पन्न होना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं जो सुखमय जीवन के लिये आवश्यक हैं । हमें इसका नितान्त ध्यान रखना है और इन सब सँस्कारों को विधिवत्सम्पन्न करवाने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिये । सँस्कारों से ही मनुष्य सँस्कृत (कल्चर्ड) बनता है । जैसे सोना अग्नि में तपकर कुन्दन बनता है वैसे ही मनुष्य सँस्कारों से सँस्कारित होकर श्रेष्ठ बन जाता है ।

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्ष परम्परा की मर्यादा में उपर्युक्त १६ सँस्कारों को प्रमाणित मानते हुये वैदिक मान्यताओं की सुरक्षा हेतु और इसके माध्यम से संसार का उपकार हो सके; इसको मद्दे नजर रखते हुये एक सँस्कार-विधि नामक प्रामाणिक पुस्तक लिखी तथा सबको इस पुस्तक के अनुसार इन १६ सँस्कारों को सम्पन्न करने-कराने का निर्भ्रम आदेश दिया । यह पुस्तक विधि एवं व्याख्या से पूर्ण वैदिक एवं वैज्ञानिक है । पाठक समय निकालकर इस पुस्तक को कभी अवश्य पढ़ें । सभी आर्य समाजों में यह हिन्दी/ अँग्रेजी आदि भाषाओं में उपलब्ध है ।

उच्ची शिक्षा अच्छी बात है पर अच्छी शिक्षा इससे भी अच्छी बात है । यहाँ अच्छी शिक्षा का वैदिक अर्थ ”सँस्कारित” है । ये सँस्कार मनुष्य के मन, वुद्धि, चित्त, अहँकार अन्त:करण चतुष्ट्य को उत्तम बनाते हैं और इस प्रकार मनुष्य-आत्मा श्रेष्ठ और सुखी बनता जाता है । अत: हमें सँस्कारों को अत्यन्त श्रद्धा से सम्पन्न करना/ करवाना चाहिये । यह स्वयं , परिवार, समाज व राष्ट्र सब के लिये सदा सुखदायक है । ऐसे उत्तम सुखदायी कार्य/ अनुष्ठान की सम्पन्नता से हम कभी जी न चुरायें । ऐसा करना हमारा अच्छी संतानों के निर्माण में परम धर्म होगा जिसका सुख हमें ही मिलना है ।

Obesity

Two thirds of British adults are overweight and one in four of us is classified as obese.

Jacques Peretti traces those responsible for revolutionising our eating habits, to find out how decisions made in America 40 years ago influence the way we eat now.

Peretti travels to America to investigate the story of high-fructose corn syrup. The sweetener was championed in the US in the 1970s by Richard Nixon's agriculture secretary Earl Butz to make use of the excess corn grown by farmers. Cheaper and sweeter than sugar, it soon found its way into almost all processed foods and soft drinks. HFCS is not only sweeter than sugar, it also interferes with leptin, the hormone that controls appetite, so once you start eating or drinking it, you don't know when to stop.

Endocrinologist Robert Lustig was one of the first to recognise the dangers of HFCS but his findings were discredited at the time. Meanwhile a US Congress report blamed fat, not sugar, for the disturbing rise in cardio-vascular disease and the food industry responded with ranges of 'low fat', 'heart healthy' products in which the fat was removed – but the substitute was yet more sugar.

Meanwhile, in 1970s Britain, food manufacturers used advertising campaigns to promote the idea of snacking between meals. Outside the home, fast food chains offered clean, bright premises with tempting burgers cooked and served with a very un-British zeal and efficiency. Twenty years after the arrival of McDonalds, the number of fast food outlets in Britain had quadrupled.

Reflections on Swami Dayanand and purpose of Arya Samaj

For all of us, it must be clear that Rishi Dayaanand Sarawati did not create any new system of operation, but all that he wished for, were for the human population to move back to the pristine time when the knowledge of the Vedas led civilizations. That is the reason why we notice that the princiuples of the Arya Samaj are not draconian, partial, inhuman, or confined to any etnic, racial or geographical regions.

The 6th. principle states that (Saptam niyam)

"Sab ae prem preeti poorvak, dharmaanusaar, yathaa-yogys bartnaa chashiye."

" The primary objective of the Arya Samaj is to do good to the whole world and to promote physical, spiritual and social progress of all humanity. "

Let us **not** be baffled and over-engrossed in the many technical aspects of Hinduism and fail to recognize the more simplistic activities and ideas that can help us in propagating this principle.

Let us take enough time off our busy schedules and ponder on the things that each one of us can do on a daily basis, with our friends and families to promote physical, spiritual and social ideas for everyone.

While we examine our thought processes, let us be guided by the many mantras of Vedas, in which we petition to God for refined intellect.

The Gaayatree Mantra is a perfect one to start with.

In Gaayatree Mantra, we try to understand God's Eternal pool of knowledge, by turning our attention to the brilliance of the Sun. The way that the rays of the cosmic sun eradicates all forms of phisical darkness from the world, in such systematic manner, God's revealed knowledge in the Vedas are eneough for us to drive away from our human world (individual self), many forms of darknesses, such as untruth, dishonesty, ego, lustfullness, hate, maliciousness, ignorance and so many more unwanted tendencies and qualities.

When our intellect accepts purification with the flow of Divine wisdom, then naturally our thinking becomes sanctified, followed by proper actions, in confirmity with the dictates of the Vedas, proper social rules and regulations.

When we are convinced that our actions must be in line with all the positive declarations and revelations at all times, then we will not engage in any other act, other than those which will bring progress to phisical, spiritual and social challenges.

It must be noted that this priciple of life was foremost in the minds of many past spiritual masters of time, including Shri

Raam, Shri Krishna... and that is why we still look to their way of life for guidance, because they led Vedic lives.

Rishi Dayaanand was no different.

The world is no less filled with all sorts of personalties, good and bad, and all of us have a duty to embrace this principle of the Arya Samaj, for it is meant for the good of all humanity.

Let us not live our lives by just doing the normal daily things, but be insipred by this declaration, to urge our families and friends to take up many more challenges that will foster and promote the positive well-being of all humanity.

A popular Hindu statement is that " if we only eat, sleep, drink, procreate on a dialy basis without entertaining some positive thinking, then we are no different from the other animals "

The Huiman body is a special one, and it comes with its duties. Let us live up to this expectation of the priciple examined here and move society in the right direction.

May we see Rishi Dayaanand in the context of forward thinking.Prem se bolo Vaidic Satya Sanaatam Dharma kee jai.

Shailesh Joshi

VEDIC VIVAH MELA (Matrmonial Get Together) 2014

Date: Saturday 17th May 2014

Venue: Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website) www.arya-samaj .org

Time:12 noon 6.30pm, (Please note that if you arrive later than 12.30 pm, you will be allowed to attend the get-together, however, we cannot promise that you will be able to fully participate and benefit from the sequence of the programme lined up for the afternoon).

Cost: Applicant - £20.00   Guest - £15.00

Buffet: Vegetarian meal included with soft drinks (no alcohol will be allowed or served)

How will it work?

For the first hour we will have registration, welcome drink and mingling. **After the guest will be asked to leave and the speed dating will start.**

Members will meet each other for a period of 3 to 4 minutes, during which you will be able to chat and find out about each other. (If you like the person, make a note of their ref number on the packs given on the day and we will send you there information by email). When the time is up, a bell will sound; you will change partner and repeat the process.

At 4.30pm guest can return, dinner will be severed and everyone is free to mingle some more before the end of the event.

We will explain the above and other details of the event between **12.00 and 1.00** pm at the venue, so it is important that you arrive on time so as to participate and benefit fully from the line up of the programme for the day.

What you need to do now:

This Get-together is strictly for Arya samaj west Midlands registered matrimonial service candidates only. So if you are not registered as yet and wish to benefit from this event where you can meet personally a number of prospective partners hurry up and join. Forms are available on our website www.arya-samaj.org. Or tel. 0121 359 7727

This time we have decided to limit the number of participants, so please send your application forms well before the day of the event because it is first come first served basis. (Form enclosed). For the smooth running of the event, all the information must be processed and the paper work completed for the participants on their arrival. Applications received after 6th May 2014, would not be entertained. But please do not wait till the last date. It might be too late.

We are also letting you bring up to 2 guests. You must indicate this on your application form; otherwise they will be refused entry on the day. The cost of each guest will be £15.00. Guest must understand that they can only come for registration. They must leave for the speed dating and can return for dinner. They must also understand that they will not be given any information on applicants on the day. This event is only for applicants. Only they can request information about other applicants..

Please send application forms and cheques made payable to ‘Arya Samaj West Midlands**. (Applicants £20 and guest £15 each.)** You will only be allowed entry by ticket, bought in advance. Regrettably no entry tickets will be available on the day. **If you come on the day without an entry ticket it would be a wasted journey.**

So what are you waiting for? Look no further and think no further! Send in your application forms and cheque today! **We look forward to welcoming you to the event were you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!**

Havan performed by our learned priest Acharya Dr Umesh Yadav for

01.03.2014 Miss Rekha Gore on her birthday

08.03.2014 Mrs. Satya Bhardwaj for the 23rd death anniversary of her husband Mr Parsurama Bhardwaj's

DR. Vinod Chauhan for prosperities in family

Privilege of being Yajman in the Havan at Arya Samaj West Midlands in Sunday Satsang for arriving first.

23.02.2014 Mr Omesh Takian
02.03.2014 Mrs S. Grover

DONATIONS TO ARYA SAMAJ WEST MIDLANDS

Mrs Asha Verma	£11	Mr Omesh Takian	£30
Mrs S. Grover	£25	Miss Charu Malhotra	£31
Dr P.D. Gupta	£51		

DONATIONS TO ASWM through PRIEST SERVICE

Miss Rekha Gore	£31	Anonymous	£21
Mrs Satya Bharadwaj	£50	Dr Vinod Chauhan	£50

The list of the Trusteees and the office bearers

Dr. Narendra Kumar	Chairman
Dr. Arvind Sharma	Secretary
Mr. Harish Malhotra	Treasurer
Mr. Krishan Chopra	
Dr. Umesh Kathuria	
Mr. Satya Prakash Gupta	
Mr. Rajiv Datta	
Mr. Shailesh Joshi	
Mr. Sanjive Mahandru	

The Services of Arya Samaj West Midlands

1. **Weekly Satsang every Sunday:-**
   - Havan : 11am to 12 noon.
   - Can join in as part of congregation or as a yajman to celebrate or to remember a departed dear one.
   - 1pm Rishi Langar

2. **Social Group: Every Wednesday**
   - Pranayam and Aasans 11to 12.30
   - group discussion: till 1pm
   - Hot Lunch: 1pm

3. **Dance Classe**
   - By a highly qualified teacher
   - Sunday from 10 am to 12 noon.

4. **Monthly Ved Prachar at Radio XL**
   - 1st Sunday of every month 7am to 8am

5. **Priest service:**
   - for all your Weddings and other Sanskars we have a highly qualified resident priest Dr Umesh Yadav. You can contact him on 0121 359 7727.

6. **Library :**
   - Vedic, religious and other relevant books. Please take advantage of this extensive collection.

7. **Vedic Vivah (Matrimonial) Service:**
   - Our service is one of the best in U.K. We have more than seven hundred members and it is updated with new entries every month.

Arya Samaj (Vedic Mission) West Midland Hall is available for hire at a very low cost.

Our premises are licensed for the civil marriage ceremony

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

Tel. No. 0121 359 7727.

E-mail- enquiries@arya-samaj.org,

Website: www.ara-samaj.org